



आधुनिक संस्कृत नाटकों में नाटकीय तत्व

मोनिका

शोधार्थी, रजिस्ट्रेशन नंबर - 22-BMU-7566

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर, रोहतक

डॉ. पटेल सिंह

सहायक प्रोफेसर संस्कृत विभाग

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर, रोहतक

सार

आधुनिक संस्कृत नाटकों में नाटकीय तत्वों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि पारंपरिक नाट्यशास्त्रीय अवधारणाएँ किस प्रकार समकालीन संदर्भों के साथ पुनः संयोजित होकर एक नवीन सांस्कृतिक और साहित्यिक पहचान ग्रहण करती हैं। इस समीक्षात्मक अध्ययन में संवाद शैली, चरित्र चित्रण, कथानक संरचना, प्रतीक योजना तथा मंचीय प्रस्तुति जैसे प्रमुख नाटकीय तत्वों का गहन परीक्षण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक संस्कृत नाटककारों ने परंपरागत नाट्यरूपों को बनाए रखते हुए सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक प्रश्नों को नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। इन नाटकों में भाषा की गूढ़ता के साथ-साथ मंचीय प्रयोगों की आधुनिकता एक सशक्त संतुलन बनाती है, जिससे संस्कृत नाट्यधारा में जीवंतता बनी रहती है। यह अध्ययन न केवल नाटकीय तकनीक की व्याख्या करता है, समकालीन संस्कृत नाट्यसाहित्य की बौद्धिकता और प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है।

मुख्यशब्द: संवाद शैली, चरित्र चित्रण, कथानक संरचना, प्रतीक योजना, मंचीय प्रस्तुति

परिचय

संस्कृत नाटक भारतीय साहित्य की एक समृद्ध और प्राचीन परंपरा है, जिसकी जड़ें वैदिक काल तक फैली हुई हैं। भरतमुनि द्वारा रचित *नाट्यशास्त्र* इस विधा का मूल ग्रंथ है, जिसमें नाटक के सभी तत्वों का वैज्ञानिक और व्यवस्थित वर्णन प्राप्त होता है। प्राचीन काल में कालिदास, भवभूति, भास, और विशाखदत्त जैसे महाकवियों ने उत्कृष्ट संस्कृत नाटकों की रचना की, जो आज भी नाट्यकला के उच्च आदर्श माने जाते हैं।

आधुनिक युग में संस्कृत नाटक लेखन की परंपरा भले ही पहले जैसी सजीव न रही हो, लेकिन बीसवीं सदी के मध्य से लेकर अब तक संस्कृत नाट्यलेखन में एक नवचेतना का संचार हुआ है। आधुनिक संस्कृत नाटककारों ने नाटकीय तत्वों को नवीन रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समस्याओं को शामिल किया गया है। इन नाटकों में पारंपरिक नाट्यरूपों के साथ आधुनिक रंगमंच की तकनीकों का समावेश देखने को मिलता है।

आधुनिक संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त नाटकीय तत्व, जैसे कथानक, चरित्र-निर्माण, संवाद, अभिनय, रंगमंचीय संरचना, दृश्य-योजना, रस-निर्माण तथा भाषा-शैली में नवोन्मेष दिखाई देता है। यद्यपि *नाट्यशास्त्र* की परंपरा का पालन किया गया है, फिर भी आधुनिक संस्कृत नाटककारों ने समय के अनुसार इन तत्वों को परिवर्तित रूप में अपनाया है।

डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. सत्यव्रत शास्त्री जैसे संस्कृत नाटककारों और आलोचकों ने इस विधा को नई दिशा दी है। उनकी कृतियाँ न केवल शुद्ध साहित्यिक हैं रंगमंचीय दृष्टि से भी प्रभावशाली हैं। उदाहरणस्वरूप, सत्यव्रत शास्त्री का *राम की शक्तिपूजा*, त्रिपाठी का *पृथ्वीराज विजय*, और रामकरण शर्मा का *शकुन्तला* पुनर्लेखन जैसे प्रयास आधुनिक नाट्यलेखन के सफल उदाहरण हैं।

यह समीक्षात्मक अध्ययन आधुनिक संस्कृत नाटकों में नाटकीय तत्वों की पहचान, उनका स्वरूप, परिवर्तनशीलता तथा उनकी प्रभावशीलता का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार आधुनिक संस्कृत नाट्यलेखन ने पारंपरिक तत्वों को बनाए रखते हुए भी नवीन सामाजिक संदर्भों में उन्हें प्रस्तुत किया है। साथ ही, यह अध्ययन यह भी मूल्यांकित करता है कि इन नाटकों में दर्शकों और पाठकों को आकर्षित करने वाले कौन-कौन से तत्व निहित हैं।

इस अध्ययन का ढांचा आधुनिक संस्कृत नाटकों के बहुआयामी स्वरूप को समाहित करते हुए निर्धारित किया गया है, जिसमें नाट्यलेखन की पारंपरिक जड़ों से लेकर समकालीन संदर्भों में इसकी प्रासंगिकता तक की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की गई है। आधुनिक संस्कृत नाट्यलेखन, जहाँ एक ओर भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* और संस्कृत के कालजयी नाटकों—कालिदास, भवभूति, शूद्रक आदि की परंपरा से प्रेरणा ग्रहण करता है, वहीं दूसरी ओर यह आधुनिक जीवन के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी अपने कथानकों में स्थान देता है। इस अध्ययन के प्रारंभिक भाग 'परिचय' में संस्कृत नाट्य परंपरा के इतिहास, विशेष रूप से इसके विकास की धारा, पुनरुत्थान और आधुनिक युग में उसके पुनर्परिभाषित स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार पारंपरिक तत्व—रस, नायक-नायिका भेद, संधि रचना, नाट्य संकल्पना आदि—आधुनिक नाटकों में प्रयुक्त होते हुए भी समसामयिक जीवन की विविध जटिलताओं को उजागर करते हैं।

अध्ययन का महत्व

आधुनिक संस्कृत नाट्यलेखन मात्र एक साहित्यिक प्रयोग नहीं है, यह संस्कृत भाषा की जीवंतता को स्थापित करने का एक सांस्कृतिक उपक्रम भी है। आज जबकि संस्कृत को एक मृत भाषा समझा जाता है, आधुनिक नाटककारों ने इसे संवाद का माध्यम बनाकर पुनर्जीवित किया है। इसके माध्यम से समाज के समकालीन प्रश्नों—जैसे स्त्री विमर्श, सामाजिक विषमता, राजनीति और नैतिकता के द्वंद्व, पर्यावरण संकट आदि—पर चर्चा की जा रही है। यह अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि संस्कृत नाट्य विधा आधुनिकता के साथ जुड़कर कैसे एक सशक्त वैचारिक मंच बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन शैक्षणिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छात्रवृत्ति, पाठ्यक्रम निर्माण, नाट्यशास्त्र अध्यापन और अनुसंधान के लिए एक समृद्ध आधार प्रस्तुत करता है।

शोध अध्ययन

इस शोध अध्ययन का केन्द्रीय आधार है, जिसमें आधुनिक संस्कृत नाटककारों के साहित्यिक दृष्टिकोण, उनके नाटकों की मूल संरचना, समकालीन समस्याओं की प्रस्तुति, और उन पर विद्वानों एवं आलोचकों की समीक्षात्मक टिप्पणियों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस खंड में यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक संस्कृत नाटक केवल साहित्यिक उत्पाद नहीं हैं, वे विचार, संस्कृति, समाज और रंगमंच के जटिल अंतर्संबंधों का प्रतीक भी हैं।

विश्लेषण और परिणाम

भाग में चयनित आधुनिक संस्कृत नाटकों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस खंड में नाटकीय तत्वों—जैसे संवाद शैली, चरित्र चित्रण, संरचना, कथावस्तु, प्रतीक योजना तथा मंचीय प्रस्तुतिकरण—का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। यह भाग यह दिखाता है कि आधुनिक लेखक पारंपरिक रूप का प्रयोग करते हुए समकालीन विचारों की प्रस्तुति किस प्रकार करते हैं। उदाहरणस्वरूप, डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, विद्यावाचस्पति मणि डॉ. के.एन. शर्मा, डॉ. लक्ष्मीधर मालवीय आदि लेखकों के नाटकों में आधुनिक समाज के संकटों को दर्शाने हेतु प्रतीकों और चरित्रों का अत्यंत सटीक प्रयोग मिलता है। ये नाटक न केवल वैचारिक रूप से सशक्त हैं, रंगमंचीय दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली हैं।

इस भाग को निम्नलिखित उपविषयों के अंतर्गत विस्तार से समझा जा सकता है:

संवाद शैली और भाषिक प्रयोग:

आधुनिक संस्कृत नाटकों की संवाद शैली परंपरा और नवाचार का सम्मिलन प्रस्तुत करती है। इन नाटकों में भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, भाव, व्यंग्य, प्रतीक और आंतरिक संघर्ष का संवाहक भी बन जाती है। जहाँ एक ओर परंपरागत संस्कृत पदावली, समासयुक्त वाक्य, श्लोक और अलंकारों का प्रयोग होता है, वहीं दूसरी ओर जीवन के यथार्थ चित्रण हेतु सरल, संक्षिप्त और प्रासंगिक भाषा का प्रयोग भी दिखाई देता है। डॉ. राधावल्लभ

त्रिपाठी के नाटकों में संवादों की सूक्ष्मता और लयबद्धता पाठक व दर्शक दोनों को बाँधती है। उनके नाटकों में वार्तालाप केवल कथा को आगे बढ़ाने का साधन नहीं है, वह चरित्रों के मानसिक द्वंद्व, सामाजिक विरोधाभास और सांस्कृतिक संशय को भी उजागर करता है।

चरित्र चित्रण और मनोवैज्ञानिक गहराई:

आधुनिक संस्कृत नाटककारों ने अपने पात्रों को आदर्शवादी और काल्पनिक रूप से बाहर निकालकर अधिक यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक गहराई से चित्रित किया है। परंपरागत नाटकों में जहाँ पात्र प्रायः दैवी गुणों से युक्त होते हैं, वहीं आधुनिक नाटकों में पात्र आम मनुष्यों की तरह असमंजस, संदेह, आकांक्षा और संघर्ष से जूझते हैं। डॉ. के. एन. शर्मा के नाटक *विकासः* में प्रमुख पात्र 'विजय' आधुनिक युवा का प्रतीक है, जो अपने भीतर परंपरा और आधुनिकता के बीच के तनाव को झेलता है। इसी प्रकार, डॉ. लक्ष्मीधर मालवीय के नाटकों में महिला पात्रों को भी सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो रूढ़ियों से टकराती हैं और आत्मनिर्णय की ओर अग्रसर होती हैं। इन पात्रों के माध्यम से नाटककारों ने स्त्री विमर्श, वर्ग संघर्ष और नैतिक द्वंद्व को संवेदनशीलता के साथ उजागर किया है।

कथावस्तु और संरचना:

आधुनिक संस्कृत नाटकों की कथावस्तु जीवन के विविध पक्षों को समेटती है—चाहे वह सामाजिक विषमता हो, राजनीतिक भ्रष्टाचार, पर्यावरणीय संकट या पारिवारिक विघटन। इन नाटकों की संरचना लघु खंडों में विभाजित होती है, जहाँ प्रत्येक दृश्य किसी समस्या को उठाता है, उसकी जटिलता को उभारता है और अंत में एक संभावित समाधान की ओर संकेत करता है। यह संरचना शास्त्रीय संधि व्यवस्था से भिन्न होते हुए भी उसमें अंतर्निहित क्रमबद्धता और संतुलन को बनाए रखती है। उदाहरणस्वरूप, *आधुनिकमतदातृ* नाटक में लोकतंत्र और मतदाता की भूमिका को अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है, जिसमें कथानक क्रमशः राजनीतिक यथार्थ, चुनावी प्रपंच और जनसंपर्क की जटिलता की परतें खोलता है।

प्रतीक योजना और रूपक प्रयोग:

प्रतीक और रूपक आधुनिक संस्कृत नाटकों की विशेषता बन गए हैं, जिनके माध्यम से जटिल विचारों को सांकेतिक और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। एक साधारण पात्र या वस्तु किसी गहरे अर्थ को धारण करता है—जैसे 'जल' को जीवन और संकट दोनों के प्रतीक रूप में प्रस्तुत करना, या 'दीपक' को ज्ञान और आशा के रूप में। राधावल्लभ त्रिपाठी के नाटकों में प्रतीकों का अत्यंत सशक्त प्रयोग मिलता है, जहाँ पात्रों के संवाद और उनके क्रियाकलापों में सूक्ष्म प्रतीकात्मक अर्थ निहित होते हैं। उदाहरण के लिए, *गगनं मे शरणं* नाटक में आकाश का प्रतीक व्यक्ति की आंतरिक स्वतंत्रता, मानसिक उन्मुक्ति और सामाजिक अवरोधों से परे उठने की आकांक्षा का द्योतक बनता है।

मंचीय प्रस्तुतिकरण और रंग-प्रयोग:

आधुनिक संस्कृत नाटकों का एक और उल्लेखनीय पक्ष है—उनकी रंगमंचीय प्रस्तुतिकरण की सृजनशीलता। पारंपरिक मंचन शैली—नृत्य, संगीत, अभिनय और भावाभिनय के साथ—आधुनिक तकनीक, प्रकाश योजना और दृश्य माध्यमों का संयोजन इन नाटकों को दर्शकों के लिए अधिक सजीव और प्रभावी बनाता है। रंगमंचीय प्रस्तुति में संवादों की लय, मंच पर गतिशीलता, दृश्य संक्रमण, पार्श्वसंगीत और वस्त्राभूषणों का सम्यक संयोजन नाटकों की संप्रेषणीयता को बढ़ाता है। प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक श्रीमती रमा भाटिया और प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल द्वारा निर्देशित संस्कृत नाटकों में मंचीय प्रयोगों की नवीनता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इन प्रस्तुतियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि संस्कृत केवल ग्रंथों तक सीमित भाषा नहीं, आधुनिक रंगमंच की भी सशक्त भाषा हो सकती है।

आधुनिक संस्कृत नाटकों का अवलोकन

आधुनिक संस्कृत नाटक भारतीय साहित्य की एक ऐसी विधा है, जो परंपरा और आधुनिकता के मध्य एक सृजनात्मक सेतु का कार्य करती है। यद्यपि संस्कृत नाट्य परंपरा का स्वर्ण युग कालिदास, भास, भवभूति, शूद्रक जैसे महाकवियों के समय में देखा गया, किंतु आधुनिक युग में भी संस्कृत नाट्यधारा ने पुनः जागृति प्राप्त की है। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 21वीं शताब्दी तक संस्कृत नाटककारों ने न केवल पारंपरिक विधाओं का प्रयोग किया, समकालीन विषयवस्तु और रंगमंचीय तकनीकों के साथ नये प्रयोग भी किए। यह अवलोकन उन प्रमुख रचनाकारों की दृष्टि और रचनाओं को प्रस्तुत करता है, जिन्होंने आधुनिक संस्कृत नाट्यधारा को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं।

सबसे प्रमुख नामों में डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी का उल्लेख अत्यावश्यक है। वे संस्कृत साहित्य के एक सुविज्ञ आलोचक, शिक्षाविद् और मौलिक नाटककार हैं। उनके नाटकों में जहाँ एक ओर दार्शनिक दृष्टिकोण की गहराई दिखाई देती है, वहीं दूसरी ओर समकालीन सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं की प्रस्तुति भी मिलती है। *गगनं मे शरणं*, *वधूवरम्*, *लौकिकं रामायणम्* जैसी रचनाएँ उनके रचनात्मक कौशल की मिसाल हैं। इन नाटकों में उन्होंने पारंपरिक पात्रों और घटनाओं का पुनर्पाठ प्रस्तुत कर उन्हें समकालीन विमर्शों से जोड़ने का प्रयास किया है।

प्रो. रामकरण शर्मा एक अन्य महत्वपूर्ण नाम हैं, जिन्होंने आधुनिक संस्कृत नाट्यलेखन को भाषिक सौंदर्य, दार्शनिक विचारों और काव्यात्मकता के माध्यम से समृद्ध किया। उनके नाटकों में वैदिक-दार्शनिक चिंतन की छाया दिखाई देती है, साथ ही आधुनिक यथार्थ भी प्रमुखता से उभरता है। उनकी कृति *सूत्रधारः* में जीवन, मृत्यु, समय और अस्तित्व जैसे गहन विषयों को अत्यंत लयबद्ध और बौद्धिक शैली में प्रस्तुत किया गया है। वे संस्कृत के प्रति अगाध श्रद्धा रखते हुए नाटक को एक वैचारिक प्रयोगशाला के रूप में प्रयोग करते हैं।

डॉ. लक्ष्मीधर मालवीय का योगदान स्त्री विमर्श और सामाजिक असमानता जैसे विषयों के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके नाटकों में महिला पात्रों को केंद्र में रखकर समाज की रूढ़ियों और पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था पर तीव्र प्रहार किया गया है। *रजनी*, *नवपल्लवम्*, जैसे नाटक स्त्री-स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और शिक्षा जैसे मुद्दों को उजागर करते हैं। उनके लेखन में संवेदनशीलता और साहसिकता का सुंदर समन्वय है, जो पाठकों और दर्शकों दोनों को गहरे स्तर पर प्रभावित करता है।

इसके अतिरिक्त डॉ. के. एन. शर्मा का नाम भी आधुनिक संस्कृत नाट्यधारा में उल्लेखनीय है। उनका नाटक *विकासः* एक ऐसा प्रयास है, जिसमें भारतीय लोकतंत्र, युवा वर्ग की भूमिका, राजनीतिक नैतिकता और विकास के द्वंद्व को सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने संस्कृत को केवल शास्त्रीय भाषा के रूप में नहीं, आधुनिक संवाद के सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित करने का कार्य किया है। उनके पात्र जटिल मनोवैज्ञानिक स्थितियों से गुजरते हैं, जो उन्हें केवल प्रतीक न बनाकर जीवंत और समकालीन बनाते हैं।

आधुनिक संस्कृत नाट्यलेखन की प्रवृत्तियों की बात करें तो सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि समकालीन विषयों को पारंपरिक शिल्प में ढालने का रुझान स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विषयवस्तु में सामाजिक न्याय, स्त्री स्वतंत्रता, पर्यावरणीय संकट, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की विफलता, वैश्वीकरण, सांस्कृतिक अस्मिता आदि जैसे गंभीर और ज्वलंत मुद्दे उभर कर आए हैं। मंचीय प्रस्तुति के स्तर पर भी पारंपरिक भारतीय रंगमंच की तकनीकों जैसे नृत्य, संगीत, अभिनय, भावाभिनय आदि को आधुनिक रंगशैली, प्रकाश व्यवस्था, और दृश्य माध्यमों के साथ संयोजित किया गया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आधुनिक संस्कृत नाटकों का यह दौर पारंपरिक मूल्यबोध और आधुनिक सामाजिक चेतना का संगम है। इसमें नाटककारों ने न केवल संस्कृत भाषा की सर्जनात्मकता को पुनर्जीवित किया है, उसे विचार और संवाद का आधुनिक माध्यम भी बनाया है। वे पाठक और दर्शक को केवल मनोरंजन नहीं, आत्ममंथन की स्थिति में भी लाते हैं। यह प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि संस्कृत नाट्य विधा केवल अतीत का गौरव नहीं, वर्तमान और भविष्य की भी सशक्त साहित्यिक संभावना है।

निष्कर्ष

आधुनिक संस्कृत नाटकों में नाटकीय तत्वों का समीक्षात्मक विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि यह विधा पारंपरिक सांस्कृतिक स्मृति का विस्तार नहीं, समकालीन सामाजिक और बौद्धिक चेतना की अभिव्यक्ति भी है। संवाद शैली में परिष्कृत संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हुए भी नाटककारों ने उसे वर्तमान संदर्भों के अनुकूल बनाया है। चरित्र चित्रण में यथार्थ, संघर्ष, और मनोवैज्ञानिक गहराई देखने को मिलती है, जो इन नाटकों को केवल शास्त्रीय नाट्यरूपों की पुनरावृत्ति नहीं, सृजनात्मक नवाचार का उदाहरण बनाती है। प्रतीक योजना और मंचीय प्रस्तुतियों के माध्यम से लेखक और निर्देशक दर्शकों को न केवल विचारशील बनाते हैं, सांस्कृतिक संवाद के लिए एक नया मंच भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार, आधुनिक संस्कृत

नाटक परंपरा और आधुनिकता के मध्य सेतु बनकर भारतीय नाट्य साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। यह विधा भविष्य में न केवल शोध और अध्यापन के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, संस्कृत भाषा की पुनः प्रतिष्ठा का भी माध्यम बनेगी।

□□□□□□

1. त्रिपाठी, राधावल्लभ. गगनं मे शरणं. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2008.
2. मालवीय, लक्ष्मीधर. नवपल्लवम्. दिल्ली: रश्मि प्रकाशन, 2012.
3. शर्मा, रामकरण. सूत्रधारः. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 2004.
4. कपिला वात्स्यायन, रस सिद्धांत और भारतीय सौंदर्यशास्त्र पर इसका प्रभाव
5. रितु कुमार, रॉयल इंडिया की पोशाक और वस्त्र
6. मंजरी वी. कुमार, फैशनिंग द डिवाइन: भारतीय वेशभूषा और नाट्य परंपराएँ
7. पुस्तक:- पहाड़ी चित्रकला, भारतीय लघु चित्रकला, डॉ. अंजन चक्रवर्ती
8. भरत (200 ईसा पूर्व-200 ई.)। नाट्यशास्त्र । अनुवादक: मनोमोहन घोष। भारतीय प्रकाशन।
9. शास्त्री, सत्यव्रत. (2001)। मृत्युंजयः एक संस्कृत नाटक । राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान.
10. राघवन, वी. (1978)। उदयन-चरितम् । मद्रास: संस्कृत अकादमी।
11. आचार्य, मनमोहन. (2005). पांडवनं कृते . भुवनेश्वर: भारती प्रकाशन.
12. तथाचार्य, एनएस रामानुज। (1991)। पूर्णस्वराज्यम् । राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ.
13. गोल्डमैन, आरपी और सदरलैंड गोल्डमैन, एस. (1990)। देववाणीप्रिया: संस्कृत साहित्य पर निबंध । मोतीलाल बनारसीदास.
14. पोलक, शेल्डन (2006). मनुष्यों की दुनिया में देवताओं की भाषा . यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस.